MODEL ANSWER

Q. Compare and contrast the views of Mahatma Gandhi and Dr. B.R. Ambedkar on social justice and the upliftment of marginalized communities.

Mahatma Gandhi and Dr. B.R. Ambedkar were two pivotal figures in India's journey toward independence and social reform. While Gandhi emphasized moral and spiritual transformation to achieve social justice, Ambedkar advocated for structural and legal interventions to uplift marginalized communities. Their contrasting ideologies reflect diverse approaches to addressing India's systemic inequalities.

Views on Social Justice and the upliftment of marginalized communities

- **Philosophical Approach**
  - Gandhi: Advocated for ahimsa (non-violence) and sarvodaya (welfare for all), promoting community-driven change and gradual moral reform. He believed in purifying the individual and society to eliminate untouchability.
  - Ambedkar: Focused on dismantling oppressive structures through constitutional means. His philosophy centered on equality, liberty, and fraternity, inspired by modern liberal thought and Buddhism.
- **Actions and Advocacy**
  - Gandhi: Worked through campaigns like the Harijan Movement, urging upper castes to embrace Dalits. His approach relied on moral persuasion and voluntary societal reform.
  - Ambedkar: Championed the rights of Dalits through legal mechanisms, such as the Poona Pact, and by drafting the Indian Constitution. He promoted education and political representation as tools of empowerment.
- **Critiques and Limitations**
  - Gandhi: he was criticized for not fully rejecting the varna system, which he saw as a non-hierarchical occupational division. His approach to untouchability was seen as paternalistic by some.
  - Ambedkar: he criticized Gandhi's approach as inadequate for addressing structural inequalities. However, Ambedkar's radical views often faced resistance from conservative segments of society.

Contrasting opinions

- **Approach to Caste System**
  - Gandhi sought reform within Hinduism, opposing untouchability while retaining aspects of the varna system whereas Ambedkar rejected varna system entirely, viewing it as inherently oppressive, and converted to Buddhism to escape caste-based discrimination.
- **Methods of Upliftment**
  - Gandhi relied on grassroots movements, encouraging self-purification and social harmony. Ambedkar, on the other hand emphasized institutional safeguards, such as reservations and constitutional rights, for the marginalized.
- **Philosophical Outlook**
  - Gandhi's vision was rooted in Indian traditions and spirituality, focusing on rural self-reliance. However, Ambedkar's ideas were influenced by Western liberalism and modernity, advocating industrialization and urbanization for economic upliftment.

Both Gandhi and Ambedkar made unparalleled contributions to India's framework for social justice. Gandhi's moral and spiritual approach inspired unity and grassroots reform, while Ambedkar's legal and structural strategies laid the foundation for an egalitarian society. Together, their ideologies continue to inform India's ongoing struggle for equality and justice.

Samyak
An Institute For Civil Services

प्रश्न: सामाजिक न्याय और हाशिए पर रह रहे समुदायों के उत्थान पर महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के विचारों की तुलना करें?

महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर भारत की स्वतंत्रता और सामाजिक सुधार की यात्रा में दो महत्वपूर्ण व्यक्ति रहे हैं। जहाँ गांधी ने सामाजिक न्याय हेतु नैतिक और आध्यात्मिक परिवर्तन पर जोर दिया, वहीं अंबेडकर ने हाशिए पर रह रहे समुदायों के उत्थान के लिए संरचनात्मक और कानूनी हस्तक्षेप की वकालत की। उनकी विपरीत विचारधाराएँ भारत की प्रणालीगत असमानताओं को संबोधित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को दर्शाती हैं।

सामाजिक न्याय और हाशिए पर रह रहे समुदायों के उत्थान पर दृष्टिकोण

- **दार्शनिक दृष्टिकोण**
  - गांधी: उन्होनें अहिंसा और सर्वोदय (सभी के लिए कल्याण) की वकालत की, समुदाय द्वारा संचालित परिवर्तन और क्रमिक नैतिक सुधार को बढ़ावा दिया। वह अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए व्यक्ति एवं समाज की शुद्धता में विश्वास करते थे।
  - अंबेडकर: संवैधानिक साधनों के माध्यम से दमनकारी संरचनाओं को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित किया। उनका दर्शन आधुनिक उदारवादी विचार और बौद्ध धर्म से प्रेरित समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर केंद्रित था।
- **कार्य और विचारधारा**
  - गांधी: हरिजन आंदोलन जैसे अभियानों के माध्यम से कार्य किया, उच्च जातियों से दलितों को गले लगाने का आग्रह किया। उनका दृष्टिकोण नैतिक अनुनय और स्वैच्छिक सामाजिक सुधार पर निर्भर था।
  - अंबेडकर: पूना पैक्ट जैसे कानूनी तंत्रों और भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करके दलितों के अधिकारों की वकालत की। उन्होंने सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा दिया।
- **आलोचनाएँ**
  - गांधी: वर्ण व्यवस्था को पूरी तरह से खारिज न करने के लिए उनकी आलोचना की गई, जिसे वे एक गैर-पदानुक्रमित व्यावसायिक आधारित विभाजन के रूप में देखते थे। अस्पृश्यता के प्रति उनके दृष्टिकोण को कुछ लोगों ने पितृसत्तात्मक माना।
  - अंबेडकर: उन्होंने संरचनात्मक असमानताओं को संबोधित करने के लिए गांधी के दृष्टिकोण को अपर्याप्त बताते हुए आलोचना की। हालाँकि, अंबेडकर के कट्टरपंथी विचारों को अक्सर समाज के रूढ़िवादी वर्गों से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

विपरीत दृष्टिकोण

- **जाति व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण**
  - गांधी ने हिंदू धर्म के भीतर सुधार की मांग की, अस्पृश्यता का विरोध करते हुए वर्ण व्यवस्था के पहलुओं को बरकरार रखा जबकि अंबेडकर ने वर्ण व्यवस्था को पूरी तरह से खारिज कर दिया, इसे स्वाभाविक रूप से दमनकारी मानते हुए, और जाति-आधारित भेदभाव से बचने के लिए बौद्ध धर्म अपना लिया।
- **उत्थान के तरीके**
  - गांधी ने जमीनी स्तर के आंदोलनों पर भरोसा किया, आत्म-शुद्धि और सामाजिक सद्भाव को प्रोत्साहित किया। दूसरी ओर, अंबेडकर ने हाशिए पर रह रहे लोगों के लिए आरक्षण और संवैधानिक अधिकारों जैसे संस्थागत सुरक्षा उपायों पर जोर दिया।
- **दार्शनिक दृष्टिकोण**
  - गांधी की दृष्टि भारतीय परंपराओं और आध्यात्मिकता में निहित थी, जो ग्रामीण आत्मनिर्भरता पर केंद्रित थी। हालाँकि, अंबेडकर के विचार पश्चिमी उदारवाद और आधुनिकता से प्रभावित थे, जो आर्थिक उत्थान के लिए औद्योगीकरण और शहरीकरण की वकालत करते थे।

गांधी और अंबेडकर दोनों ने भारत के सामाजिक न्याय के ढांचे में अद्वितीय योगदान दिया। गांधी के नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण ने एकता और जमीनी स्तर पर सुधार को प्रेरित किया, जबकि अंबेडकर की कानूनी और संरचनात्मक रणनीतियों ने एक समतावादी समाज की नींव रखी। साथ में, उनकी विचारधाराएँ समानता और न्याय के लिए भारत के चल रहे संघर्ष का मार्गदर्शन करती रही हैं।